बिहार सरकार

वन्य–प्राणी सप्ताह

02–08 अक्टूबर 2025

हरा पत्ता, हरा फूल है जीवन का आधार!

पेड़–पौधों की विविधता के बिना अधूरी है जैव विविधता की कहानी!

वन्य–प्राणी सप्ताह में हाथी, बाघ, हिरण और अन्य विविध एवं आकर्षक जन्तुओं के साथ–साथ उनके अधिवास में पाये जाने वाले वनस्पति की विविधता और महत्ता को जानना–समझना आवश्यक है। पेड़–पौधों, बेल–लताओं, तृण–मूल आदि की उपलब्धता प्राकृतिक जाल से जुड़ी है, जो सभी जीवों का आधार है। हमारे जंगलों, घास के मैदान, आर्द्रभूमि और साथ ही शहरी उद्यानों में विविध प्रजातियों के पेड़–पौधों पाये जाते हैं।

अनगिनत जीव–जंतुओं को आवास और पोषण प्रदान के साथ–साथ शुद्ध हवा और जलवायु के अनुकूलन के लिए विविधतापूर्ण वनस्पति आवश्यक है। यह पारंपरिक चिकित्सा और जीवंत संस्कृति की आधारशिला भी है।

आज वनस्पति की विविधतापूर्ण विरासत खतरे में है।

प्रदूषण, आक्रामक विदेशी प्रजातियों के फैलाव और जलवायु परिवर्तन के कारण अमूल्य पौधों की प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। हर पौधे के साथ, उस पर निर्भर जीवन की एक पूरी श्रृंखला ही खत्म हो जाती है।

आइए, वन्य–प्राणी सप्ताह में वनस्पतिक विविधता के संरक्षण हेतु इन प्रयासों का संकल्प लें:

- ✓ **वनस्पति संबंधी जागरूकता:** अपने आस–पास के पेड़–पौधों और उनके औषधीय एवं पारिस्थितिक महत्व को पहचानें।
- ✓ **स्थानीय पेड़–पौधे लगाएँ:** बगीचे में देशी प्रजातियों को प्राथमिकता दें।
- ✓ **बीज बचाएँ और बाँटें:** पारंपरिक फसलों और स्थानीय पौधों के बीजों का संरक्षण करें।
- ✓ **जैविक खेती को बढ़ावा दें:** कीटनाशकों के हानिकारक प्रभावों से मिट्टी और जैव विविधता की रक्षा करें।

विविधतापूर्ण हरियाली है संपदा, तथा पौधों में सन्निहित है जीवों की स्वास्थ्य और समृद्धि।

बिहार राज्य जैव विविधता पर्षद् द्वारा लोकहित में प्रकाशित।